विचार बिन्दु

शारीरिक वीरता एक पाशविक प्रवृत्ति है। मनुष्य की असली वीरता तो मानसिक और नैतिक होती है। –अज्ञात

यह स्थिति किसी टाइम बम जैसी है!

इन दिनों विख्यात पत्रिका 'लैंसेट' में प्रकाशित एक शोध अध्ययन की बहुत चर्चा है। इस शोध के अनुसार भारत में दस दशमलव दस करोड़ लोग डायबिटीज़ से ग्रस्त हैं। इसमें यह जानकारी और जोड़ ली जाए कि भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में तेरह दशमलव साठ करोड़ लोग प्री-डायबिटीज़ के साथ जी रहे हैं। जिस शोध अध्ययन की चर्चा है वह लगभग एक दशक तक चला और उसमें भारत के हर राज्य के बीस साल से ज़्यादा उम्र के एक लाख तेरह हज़ार लोगों ने हिस्सा लिया। यह शोध 'द लैंसेट डायबिटीज़ एण्ड एण्डोक्राइनोलॉजी' में प्रकाशित हुआ है और इसे भारत के हर राज्य को कवर करने वाला पहला शोध कहा जा रहा है। स्थिति की गंभीरता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान तो यह था कि भारत में सात दशमलव सत्तर करोड़ लोग डायबिटीज़ से पीड़ित और लगभग ढाई करोड़ लोग प्री-डायबिटीज़ की स्थिति में होंगे। लेकिन असल स्थिति इससे बहुत ज़्यादा गम्भीर पाई गई है। स्थिति की भयावहता का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि इस शोध की प्रमुख लेखिका डॉ आरएम अंजना ने, जो डॉ. मोहन डायबिटीज़ स्पेशलिटी सेण्टर की निदेशक हैं, कहा है कि **यह स्थिति किसी टाइम बम जैसी है।** डॉ. अंजना ने अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है कि अगर आप प्री-डायबिटीज़ की स्थिति में हैं तो हमारी आबादी में डायबिटीज़ होने की दर बहुत अधिक है। प्री-डायबिटीज़ की स्थिति में होने वाले साठ प्रतिशत लोगों को अगले पांच सालों में यह बीमारी हो ही जाती है। अभी भारत में पंद्रह प्रतिशत लोग प्री-डायबिटिक हैं, इससे यह समझा जा सकता है कि आगामी पांच सालों में हमारे यहां स्थिति कितनी विकट होने वाली है। इसलिए उन्होंने इस स्थिति को टाइम बम का नाम दिया है। इस शोध के अनुसार भारत में सर्वाधिक डायबिटीज़ गोवा में है।वहां छब्बीस दशमलव चालीस प्रतिशत अर्थात एक चौथाई से ज़्यादा आबादी इससे ग्रसित है। इससे कुछ ही कम (छब्बीस दशमलव तीस प्रतिशत) लोग पुडुचेरी में और उससे कुछ कम (पच्चीस दशमलव पचास प्रतिशत) केरल में डायबिटीज़ ग्रस्त हैं। इस शोध में यह भी चेतावनी दी गई है कि उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और अरुणाचल प्रदेश में, जहां डायबिटीज़ का प्रसार कम था, अब इसके ज़्यादा फैलने की आशंका है। यह और जान लेना उचित होगा कि पूरी दुनिया में हर ग्यारह में से एक वयस्क डायबिटीज़ से प्रभावित है। डायबिटीज़ की भयावहता इस बात से भी समझी जानी चाहिए कि इसकी वजह से हृदयाघात, स्ट्रोक, अंधापन और किडनी फेल होने की आशंका बढ़ जाती है।

हमने लैंसेट पत्रिका की जिस शोध रिपोर्ट की चर्चा से अपनी बात प्रारम्भ की है उसमें यह भी बताया गया है कि भारत की कुल आबादी के ग्यारह दशमलव चालीस प्रतिशत लोग डायबिटिक हैं और साढ़े पैंतीस प्रतिशत लोग उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं। इण्डियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च व अन्य अनेक संस्थानों के सहयोग से मद्रास के डायबिटीज़ रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा किए गए अध्ययन में यह भी पाया गया है कि भारत में मोटापे के शिकार लोगों की संख्या भी बढ़कर अट्ठाइस दशमलव साठ प्रतिशत हो गई है। इन तथ्यों की प्रासंगिकता यह है कि मोटापे की समस्या को डायबिटीज़ और रक्तचाप दोनों से जोड़ कर देखा जाता है। एक तरह से इन तीनों में गहरा आपसी रिश्ता है। इन रोगों को चिकित्सा विज्ञान की भाषा में नॉन कम्युनिकेबल डिज़ीज़ (एनसीडी) के नाम से भी जाना जाता है। असल में एनसीडी का प्रयोग उन रोगों के लिए किया जाता है जो संक्रमण के माध्यम से नहीं फैलते हैं। डायबिटीज़ और उच्च रक्तचाप इसी श्रेणी के रोग हैं। सारी दुनिया में इन रोगों को मृत्यु के प्रमुख कारक के रूप में देखा जाता है।

दुनिया के अन्य अनेक देशों की ही तरह भारत में भी डायबिटीज़ और मोटापे के लिए तेज़ी से बदलती जा रही जीवन शैली को ज़िम्मेदार माना जाता है। जैसे-जैसे जीवन में सुख सुविधाओं के साधन बढ़े हैं, हमारा शारीरिक श्रम कम होता जा रहा है। हमारी आर्थिक स्थिति सुधरती है तो हम बहुत सारी यांत्रिक सुविधाओं का उपभोग करने लगते हैं जिनसे हमारा श्रम कम होता है और जिनके कारण हमारी गतिशीलता में कमी आती जाती है।

दुनिया के अन्य अनेक देशों की ही तरह भारत में भी डायबिटीज़ और मोटापे के लिए तेज़ी से बदलती जा रही जीवन शैली को ज़िम्मेदार माना जाता है। जैसे-जैसे जीवन में सुख सुविधाओं के साधन बढ़े हैं, हमारा शारीरिक श्रम कम होता जा रहा है। हमारी आर्थिक स्थिति सुधरती है तो हम बहुत सारी यांत्रिक सुविधाओं का उपभोग करने लगते हैं जिनसे हमारा श्रम कम होता है और जिनके कारण हमारी गतिशीलता में कमी आती जाती है। पहले जहां हम छोटी-मोटी दूरियां पैदल चल कर पार कर लेते थे, अब उन्हीं दूरियों को पार करने के लिए अपनी हैसियत के अनुसार दोपहिया या चार पहिया वाहनों का इस्तेमाल करने लगे हैं। पहले हम एक दो मंज़िलें आसानी से चढ़ जाते थे, अब लिफ्ट या एस्केलेटर की तरफ भागते हैं। जीवन में व्यस्तताएं भी बढ़ती जा रही हैं इसलिए हम समय बचाने के लिए यंत्रों पर अधिक निर्भर होने लगे हैं। गांवों से निकल कर हम शहरों में आ गए हैं जहां जीवन उतना स्वास्थ्यप्रद नहीं रह गया है। प्रदूषण तो खूब है ही, दूरियां भी हैं जो हमारा समय खाती हैं। इन सबकी वजह से और काम के बढ़े हुए और अनियमित घण्टों की वजह से हमारा तनाव भी कई गुना ज़्यादा बढ़ गया है। हम अधिक सुविधापूर्ण या विलासिता भरी जीवन शैली की लालसा में सीमा से अधिक काम करने लगे हैं जो हमारा तनाव कई गुना बढ़ाता है। ज़्यादा अर्जित किए गए धन और प्रचार प्रसार से प्रभावित होकर हम सहज सुलभ और स्वास्थ्यप्रद खान-पान को छोड़कर हानिप्रद फास्टफूड की तरफ भाग रहे हैं, जो दिखने में भले ही आकर्षक हो, और थोड़ी देर के लिए हमें समाज के उच्च तबके का होने का मिथ्या संतोष भी दे दे, अंततः हमारे स्वास्थ्य के लिए घातक साबित होता है। मुक्त अर्थ व्यवस्था और भूमण्डलीकरण के फैलाव की वजह से पैकेज्ड और अत्यधिक हानिप्रद फास्टफूड शहरों की सीमाओं को लांघ कर छोटे कस्बों बल्कि गांवों तक जा पहुंचा है। जो लोग इनके ख़तरों से अनभिज्ञ हैं वे ही नहीं, जो उनसे परिचित हैं वे भी झूठी दिखावटी शान के मोह में पड़कर इनका उपभोग करके अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने में पीछे नहीं रह रहे हैं। यही नहीं, बहु राष्ट्रीय निगमों और उनकी तर्ज़ पर विकसित हो रहे देशी उत्पादकों के उसी तरह के घातक खाद्य पदार्थों के बड़े बजट वाले प्रभावशाली विज्ञापनों से बच्चे इनकी तरफ आकर्षित होते हैं और मां-बाप, अगर वे समझदार हैं, न चाहते हुए भी उनकी मांग के दबाव में आकर उन्हें ये नुकसान दायक खाद्य पदार्थ सुलभ कराने से नहीं बच पाते हैं। मुनाफ़े की अंधी दौड़ का आलम यह है कि जो भारतीय कंपनियां विदेशी बहु राष्ट्रीय निगमों को बुरा भला कह कर अस्तित्व में आईं वे भी वैसे ही उत्पाद बना कर बेचने में उनकी प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। उन्हें भी लोगों की सेहत की नहीं अपने मुनाफ़े की परवाह है।

भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की जो हालत है उसे देखते हुए यह सम्भव नहीं लगता है कि एक आम आदमी नियमित रूप से अपनी स्वास्थ्य जांच के लिए किसी अस्पताल में जाए। वह तो अस्पताल में तब ही जाता है जब जाना अपरिहार्य हो जाता है। नियमित स्वास्थ्य जांच अभी तक हममें से अधिकांश लोगों के लिए बहुत दूर का सपना है, जबकि असल में एक ख़ास उम्र के बाद यह हम सबकी ज़रूरत है। सरकार की अपनी प्राथमिकताएं होती हैं और उसकी अपनी सीमाएं भी हैं। लेकिन इन सबके बावज़ूद अपनी सेहत की फिक्र करना हमारा अपना भी दायित्व है। बहुत सारी स्वास्थ्य जांचें हम स्वयं भी बहुत कम खर्च में कर सकते हैं। डायबिटीज़ की जांच, उच्च रक्तचाप की जांच, अपने वज़न पर नियंत्रण-ये सब ऐसे काम हैं जो हम किसी सरकारी या ग़ैर सरकारी किंतु महंगे अस्पताल में जाए बग़ैर भी कर सकते हैं। देश में अनगिनत सामाजिक धार्मिक संगठन और संस्थाएं हैं। वे इन सुविधाओं का और विस्तार कर सकते हैं। वैसे ये बहुत महंगी सुविधाएं भी नहीं हैं। इन सबके साथ सबसे बड़ी ज़रूरत है नागरिकों को उनके स्वास्थ्य के बारे में आधारभूत जानकारियां उपलब्ध कराने की। यह काम हमने बड़े पैमाने पर नहीं किया है, लेकिन इसे प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। और इसके लिए हमें सरकार का मुंह ताकने की ज़रूरत नहीं है। हमारे स्वयं सेवी संगठन भी इस काम के लिए आगे आ सकते हैं। वे लोगों को उनकी सेहत के प्रति जागरूक कर सकते हैं और उनके स्वास्थ्य की जांच की आधारभूत सुविधाएं सुलभ करा सकते हैं।

सारी बातों का सार यह कि डायबिटीज़ का ख़तरा बहुत तेज़ी से पैर पसार रहा है और अगर हम समय रहते नहीं चेते तो इसके दुष्परिणाम बहुत भयावह और त्रासद होने वाले हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

नशीले पदार्थ नियंत्रण नीतियों पर पुनर्विचार की आवश्यकता है

डॉ. रामावतार शर्मा

भारत में जब एक प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता का बेटा शायद थोड़ी-सी नशीली दवाओं के साथ पकड़ा गया तो पूरे देश में राजनीतिक एवम् धार्मिक भूचाल आ गया था। सच क्या था आज तक सामने नहीं आया और इस मामले से संबंधित अफसर अब खुद कानून के घेरे में हैं। इन सब किस्सों के बीच कई तरह के सवाल उठते रहते हैं परंतु एक बात धूमिल हो जाती है कि कौन से और कितनी मात्रा में पदार्थों को कानूनी तौर पर व्यावसायिक माना जाए और किसी व्यक्ति को नशीले पदार्थों का सौदागर होने का दर्जा दिया जाए। नशीले पदार्थों पर नियंत्रण करने के अभी तक के सारे प्रयास विफल रहे हैं इसलिए इस क्षेत्र में कुछ नया सोच उपजना चाहिए जिससे जीवन तबाह करने वाले इन पदार्थों पर नियंत्रण संभव हो सके।

सन् 1971 में अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने नशीले पदार्थों के व्यापार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी। आज कोई पचास वर्ष बाद हम अमेरिका की इस युद्ध नीति पर नजर डालें तो कई बातें स्पष्ट नजर आती है। पहली बात तो बताती है कि इस युद्ध में अमेरिका को विजय नहीं मिली है। नशीली दवाओं का व्यापार पहले की ही तरह फल फूल रहा है। आधी शताब्दी बीत जाने पर भी सामान्य लोगों के जीवन में स्वास्थ तथा रहन सहन के हालातों में कोई सकारात्मक परिवर्तन नजर नहीं आ रहा है। हुआ यह है कि लैटिन अमेरिका और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही स्थानों पर हजारों लोगों का जीवन तबाह हो गया। नशीली दवाओं के व्यापारी बर्बर अपराधी होते हैं इसलिए पुलिस और न्यायिक अधिकारियों के लिए उन पर हाथ डालना आसान नहीं रहता इसलिए कानून व्यवस्था ने उपभोक्ता जो कि स्वयं एक पीड़ित समूह है उस पर ही पूरा दबाव बनाना शुरू कर दिया।

इस दबाव में उपभोक्ताओं से ज्यादा तकलीफ उनके परिवारों को उठानी पड़ती है जिनसे पुलिस और अन्य सरकारी महकमों के अधिकारी धन वसूली करने लगे। इस तरह का व्यवहार विश्वयापी है परंतु लैटिन अमेरिका, केंद्रीय अफ्रीका और दक्षिण पूर्वी एशियन देशों में बहुत ज्यादा है। नशीले पदार्थों पर घोषित युद्ध से इनकी बिक्री तो कम नहीं हुई परंतु पुलिस और न्याय पालिका का कार्य काफी बढ़ गया और बड़े स्तर पर रिश्वतखोरी, चौथ वसूली और ब्लैक मेलिंग भी इन विभागों में प्रविष्ट हो गई। छुटभैये राजनेता भी इस बड़ी कमाई में घुस गए जिसकी वजह से निक्सन द्वारा घोषित यह युद्ध पूर्णतया असफल रहा है। सजा ज्यादातर मामलों में छोटे उपभोक्ताओं को ही मिलती हैं जबकि बड़े व्यापारियों का तो नाम तक पता नहीं चलता हालांकि हजारों करोड़ रूपये और डॉलर की नशीली खुराकें पकड़ी जाती हैं। दो-चार दिन हल्ला मचाया जाता है और फिर सबकुछ शांत हो जाता है।

2020 में अमेरिका में कोई 11 लाख लोग नशीले पदार्थों का उपयोग करने पर जेल भेजे गए परंतु इनमें से तकरीबन सभी लोग छोटे और शौकिया उपभोक्ता ही थे। वहां पकड़े गए लोगों में अधिकतर काले लोग थे जबकि गोरे जम कर नशा करते हैं परंतु पुलिस उनकी तरफ कम ही ध्यान देती है। अब हालात ये हो चले हैं कि जेल में बंद हर पांचवा कैदी नशीले पदार्थों का उपभोक्ता है। नशे की आदत का अपराधीकरण करने और इन पदार्थों को सिर्फ प्रशासनिक तरीकों से नियंत्रित करने के प्रयासों ने इन सब पदार्थों की खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों के मुनाफे में बेतहाशा वृद्धि की है इसलिए पुलिस, प्रशासन और राजनेताओं को खरीदना या धमकाना इन लोगों के लिए मुश्किल नहीं है।

नशीले पदार्थों को हम नारकोटिक ब्यूरो या पुलिस द्वारा नियंत्रित नहीं कर सकते। यदि ऐसा होता तो आज दुनिया में कोई 27 करोड़ से भी कुछ अधिक लोग इन पदार्थों का सेवन नहीं कर रहे होते। दुनिया भर में हर साल पांच लाख से भी ज्यादा लोग नशीले पदार्थों की अत्यधिक खुराक लेने से मरते हैं और लाखों लोग एड्स आदि का शिकार होते हैं। ऐसे लोगों को न तो कानूनों द्वारा और ना ही कलंकित करके रास्ते पर लाया जा सकता है। नशे के विरुद्ध युद्ध की असफलता बताती है कि हमें कुछ अन्य रास्ते तलाश करने होंगे। सबसे पहले तो उन लोगों और खास कर युवा लोगों को इस रास्ते पर आने से रोकना होगा। यहां आवश्यकता सजा की नहीं है बल्कि संवेदना एवम् मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को विकसित करने की है।

अमरीका सरकार की नशीले पदार्थों पर आक्रामक नीति के कारण वर्षों से जेलों में बंद हजारों लोगों को वहां के राष्ट्रपति जोए बाइडेन ने माफी जारी की है क्योंकि इन लोगों का एकमात्र अपराध अपने पास थोड़ी सी मात्रा में मारीजुआना या भांग का रखना था। पश्चिम के कई देशों में सामाजिक संगठन अपने नशीले पदार्थों के उपयोग विरोधी अभियान में अब मनोविज्ञान और आर्थिक स्थितियों से उत्पन्न प्रभावों को सम्मिलित कर रहे हैं।

आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और नस्ल संबंधी सभी पक्षों को शामिल करने के बाद ही इस विषम समस्या से निपटा जा सकता है। एशिया के देशों में अभी भी तिरस्कार, दंड और कलंक के द्वारा ही नशीले पदार्थों के उपभोक्ताओं को संभाला जा रहा है तथा इन देशों की सरकारों का इस दिशा में कोई गंभीर सोच भी देखने में नहीं आता है।

सरकारों की इस दंड प्रधान नीति के कारण नशे का आदी व्यक्ति अलग थलग पड़ जाता है जिसके फलस्वरूप वह और अधिक नशा करने लगता है। चिकित्सा क्षेत्र में नशामुक्ति केंद्र बहुत ही रूखे, अपरिष्कृत और अप्रशिक्षित हैं जहां महज कुछ नींद की दवाओं के उपयोग के अलावा और कुछ नहीं किया जाता है। कई केंद्रों में तो ऐसे व्यक्तियों को पगलाए जानवरों की तरह रखा जाता है। नशे के विरुद्ध युद्ध में किसी की भी विजय संभव नहीं है।

यहां आवश्यकता बहुमुखी सोच और समर्पित लोगों की है जो व्यक्ति और उसके पूरे परिवार की स्थिति का विश्लेषण कर कई लोगों को इस दलदल से निकाल सकने में सक्षम हों। यहां एक बात को और भी याद रखना चाहिए कि मात्र नशीले पदार्थ का सेवन करने से किसी इंसान के मौलिक मानव अधिकार समाप्त नहीं हो जाते है। बदलते समय और सामाजिक बिखराव के दौर में वैकल्पिक विचारधारा ही इस समस्या को किसी हद तक रोक सकती है। सरकारों की अति आक्रामक और दंडात्मक नीति से इस धंधे से जुड़े लोगों के मुनाफे में बेतहाशा वृद्धि होने से यह अनैतिक व्यापार उल्टे ज्यादा फलता फूलता है इसलिए इस नीति का व्यापक विश्लेषण होना चाहिए।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

गंगानगर में नहरों का पानी दूषित होने से कैंसर रोग फैल रहा है

- **श्रीगंगानगर में बड़ी संख्या में ऐसे कैंसर रोगी हैं, जो इसी नहरी पानी के कारण बीमारी का शिकार हुए हैं**
- **इलाके की इस परेशानी को रोकने के लिए श्रीगंगानगर के लोग आंदोलन कर रहे हैं**

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में पंजाब से आने वाली नहरों में केमिकल युक्त गंदा पानी इलाके के लोगों को कैंसर जैसी भयानक बीमारी का दर्द दे रहा है। जिले के कई गांवों में ऐसे लोग हैं जिन्हें इसी गंदे पानी ने इस जानलेवा बीमारी का शिकार बनाया है।

श्रीगंगानगर में बड़ी संख्या में ऐसे कैंसर रोगी हैं, जो इसी नहरी पानी के कारण बीमारी का शिकार हुए हैं। इस पानी से कई अन्य बीमारियां भी पनपने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है। पंजाब के अमृतसर और आस-पास के कई इलाकों में नहरों के किनारे फैक्ट्रियां लगी हैं। इनमें चमड़े और कई अन्य उत्पादों की फैक्ट्रियां भी हैं। इन फैक्ट्रियों से आने वाली गंदगी सीधे ही नहरों में बहा दी जाती है। श्रीगंगानगर का जिला प्रशासन इस बारे में कई बार पंजाब के सीएम और अन्य अधिकारियों से मिलता रहा है लेकिन अब तक इसका कोई समाधान नहीं हुआ है। शहर से सटे गांव साधुवाली में रहने वाली माधोदेवी के दो बेटे और बहू इस गंदे पानी के चलते कैंसर का शिकार हो चुके हैं। माधोदेवी बताती हैं कि इस गंदे पानी पर रोक लगना जरूरी है। इसी के कारण उनके बड़े बेटे गौरीशंकर को 2016 में कैंसर हो गया था। जिसके बाद 2020 में उसकी मौत हो गई। छोटा बेटा महेश 2018 में कैंसर का शिकार हुआ और 2021 में उसकी मौत हो गई। वहीं गौरीशंकर की पत्नी भगवती देवी 2014 में कैंसर का शिकार हुई और 2022 में उसकी मौत हो गई। इसी गांव में रहे हनुमान बरावड़ का कहना है कि उन्हें करीब ढाई साल से कैंसर है। वे बीकानेर और जयपुर में इलाज ले रहे हैं। वे बताते हैं कि पंजाब से आने वाली नहर उनके गांव के जरिए ही राजस्थान की सीमा में प्रवेश करती है। इलाके की इस परेशानी को रोकने के लिए श्रीगंगानगर के लोग आंदोलन कर रहे हैं। पंजाब के सीएम भगवंत मान के श्रीगंगानगर दौरे को देखते हुए इलाके के लोग इन दिनों जगह-जगह फ्लेक्स बोर्ड लगाकर हस्ताक्षर अभियान चला रहे हैं। यह फ्लेक्स पंजाब के सीएम मान को सौंपा जाएगा।

राजगढ़ धाम पर तेज हवाओं और बारिश के बीच उमड़ा आस्था का सैलाब

- **हजारों श्रद्धालुओं ने अपने दोनों हाथ उठाकर स्वेच्छा से नशा मुक्ति का संकल्प लिया**
- **मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज का 58वां जन्मदिवस आज**

अजमेर, (कासं)। अजमेर जिले के सुप्रसिद्ध सर्वधर्म धार्मिक स्थल श्री मसाणिया भैरव धाम राजगढ़ पर रविवार को बिपरजॉय तूफान की तेज हवाओं और बारिश के बीच श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी।

धाम के उपासक चम्पालाल महाराज ने सर्वप्रथम मंदिर परिसर में बाबा भैरव व माँ कालिका के साथ चक्की वाले बाबा तथा सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की पूजा-अर्चना की। धाम पर चल रहे नशा मुक्ति महा अभियान के दौरान चम्पालाल महाराज के सानिध्य में हजारों श्रद्धालुओं को अपने दोनों हाथ उठाकर स्वेच्छा से नशा मुक्ति का संकल्प दिलवाया। धाम के प्रवक्ता अविनाश सेन ने बताया कि चम्पालाल महाराज का 58वाँ जन्मदिन भैरव भक्त मण्डल के सदस्य, श्रद्धालु और ग्रामवासी हर वर्ष की भाँति धूमधाम से मनाएंगे जिसके लिए सभी ने तैयारियाँ पूरी कर ली है। सरपंच संघ के सदस्य, जनप्रतिनिधि, भैरव भक्त मण्डल के सदस्य नसीराबाद से राजगढ़ धाम तक डी.जे. ढोल नगाड़ों के साथ विशाल वाहन रैली निकालेंगे। धाम पर हजारों श्रद्धालुओं ने सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तम्भ की परिक्रमा कर चमत्कारी चिमटी लेने के पश्चात मुख्य स्थान चक्की वाले बाबा के मंदिर पर राजा रानी कल्पवृक्ष के भी परिक्रमा की।

अजमेर जिले के श्री मसाणिया भैरव धाम राजगढ़ पर रविवार को श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी।

बिजली चोरों पर छापेमारी, 10 को पकड़ा

डीग, (निसं)। बिजली चोरों पर लगाम लगाने के लिए विद्युत निगम की टीम ने अब छापेमारी शुरू कर दी है।

सहायक अभियंता लोकेश सैनी के नेतृत्व में टीम की ओर से देर रात शहर के विभिन्न इलाकों में बिजली चोरों पर की गई छापेमारी से बिजली चोरी करने वालों में हड़कंप मच गया। इस दौरान सतर्कता दल ने विभिन्न कॉलोनी-मोहल्लों में पहुंचकर बिजली चोरी करते हुए 10 जनों को पकड़ा, जिन पर 2 लाख 50 हजार रुपए का जुर्माना निर्धारित किया है। टीम में कनिष्ठ अभियंता (सिटी) भूपेन्द्र इंदौलिया, कनिष्ठ अभियंता (ग्रामीण) आकाश त्रिमूर्ति, कनिष्ठ अभियंता जनूथर भीमसिंह सहित अन्य विभाग के कर्मचारी मौजूद रहे। रात करीब 12 बजे के करीब बिजली विभाग के टीम ने शहर के नीमघटा मौहल्ला, नई सडक, गोवर्धन मोड, मसानी मौहल्ला, भीम कॉलोनी में छापेमार कार्रवाई कर 10 लोगों को बिजली की चोरी करते रंगे हाथ पकड़ा।

वानर की मौत के बाद बैकुंठी निकाली

मसूदा (निसं.)। एक बंदर की मौत पर ग्रामीणों ने बंदर के शव की बैकुंठी यात्रा निकाली और शव का वैदिक मंत्रों के साथ अंतिम संस्कार किया गया। कस्बे के ग्रामीणों ने बताया कि गावों में लोग बंदर को भगवान हनुमान जी का रूप मानते हैं। हिंदू धर्म की आस्था के अनुसार बंदर की मौत पर हिन्दू संस्कृति के अनुसार उसका अंतिम संस्कार विधि विधान के साथ किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 19 जून, 2023

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, आर्दा नक्षत्र रात्रि 8:00 तक, वृद्धि योग रात्रि 1:04 तक, बव करण दिन 11:26 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज चन्द्र दर्शन, ऊत्तर श्रृंगोन्नति है। आज से गुप्त नवरात्रा आरम्भ होंगे। आज मनोरमा द्वितीया व्रत (बंगाल में) है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:10 तक, शुभ 9:03 से 10:45 तक, चर 2:00 से 3:03 तक, लाभ-अमृत 3:03 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। नवीन व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।